डॉक्टर डी सोटो की अफ्रीका यात्रा

विलियम

डॉक्टर डी सोटो की अफ्रीका यात्रा
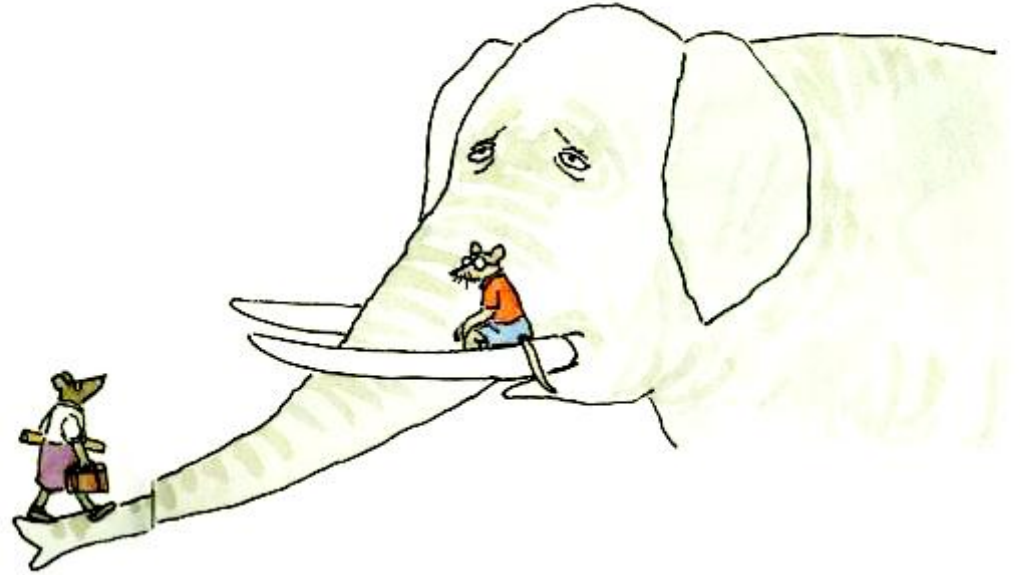
डॉक्टर बर्नार्ड डी सोटो एक दंत चिकित्सक के रूप में लाखों में एक थे। पूरी दुनिया उनके बारे में जानती थी, और उनकी पत्नी डेबोरा के बारे में भी, जो पति के काम में उनकी मदद करती थीं।

जिस शाम केबलग्राम आया तब दोनों संगीत सुन रहे थे:
“डॉक्टर डी सोटो आप जल्दी से पश्चिम अफ्रीका आएं
वहां एक हाथी के दांत में भयानक दर्द है
यहाँ कोई डेंटिस्ट उसकी मदद नहीं कर सकता है
बदले में मैं आपको मालामाल कर दूंगा “- आपका मुदम्बो हाथी

डॉक्टर डी सोटो कभी विदेश या किसी हाथी के मुंह में कभी नहीं घुसे थे। श्रीमती डी सोटो ने गाया: "हम ज़रूर जायेंगे!" और फिर उनके पति ने कहा: "हाँ, ज़रूर!"

उसके बाद उन्होंने अपनी पत्नी को गले लगाया।

उसके बस दो दिन बाद, पति-पत्नी समुद्र में उड़ती हुई मछलियाँ देख रहे थे और आरामदायक डेक कुर्सियों पर बैठे व्हेलों को निहार रहे थे। एक पीड़ित हाथी की मदद करने के लिए, वे महान महासागर का आनंद ले रहे थे।
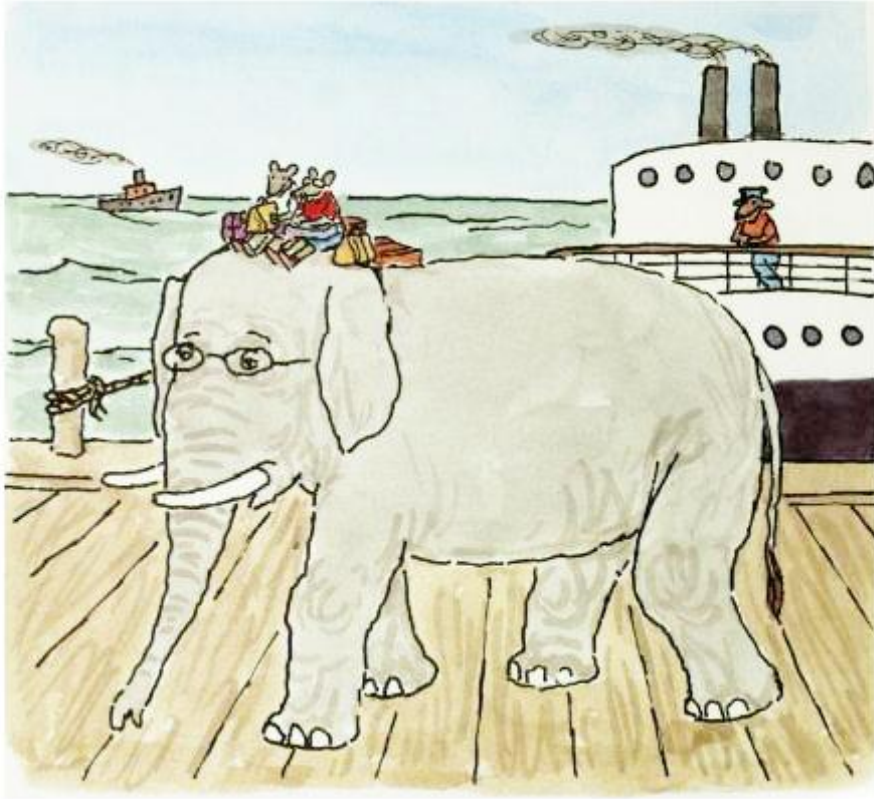
जब जहाज डबवान पहुंचा, तो मरीज का भाई अदीबा वहां उनका इंतजार कर रहा था। उसने डी सोटो दंपत्ति को तुरंत पहचान लिया। वे जहाज़ से उतरने वाले एकमात्र चूहे थे।

अदीबा ने अपना परिचय दिया, फिर वो उन्हें सामान सहित मुदम्बो के घर ले गया।

मुदम्बो अपने डॉक्टरों को देखकर इतना उत्साहित हुआ कि उसके मुंह से कोई शब्द नहीं निकला। "शुक्रिया आप दोनों का!" वो बहुत भावुक होकर बोला।
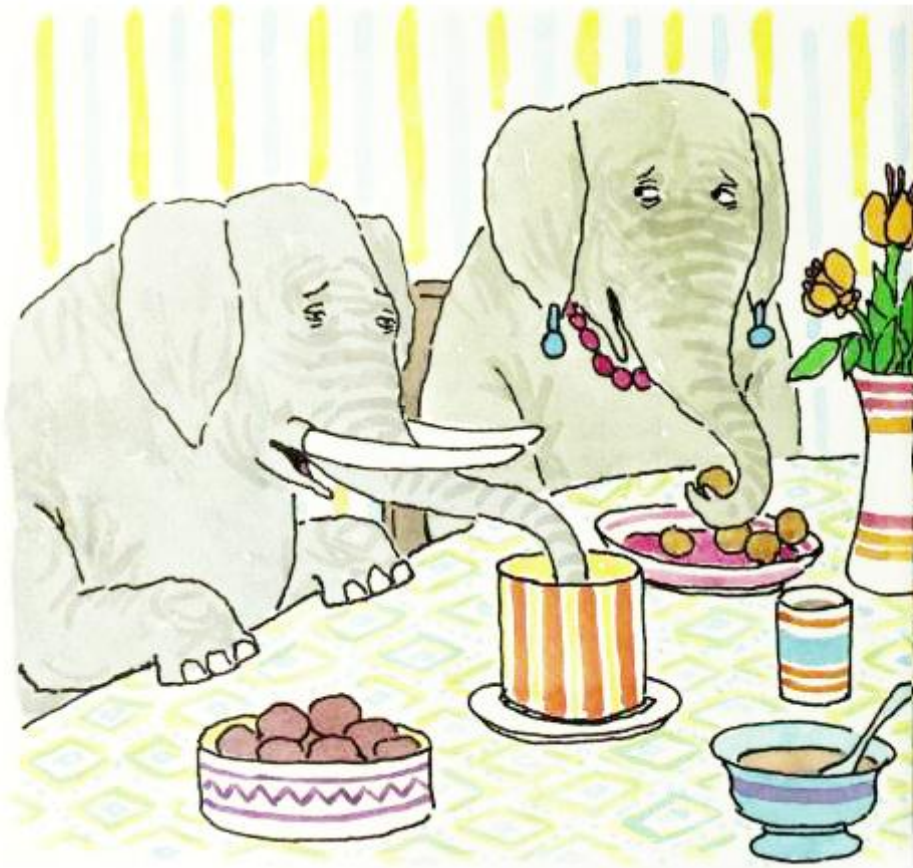
दुनिया के उस हिस्से में उस समय शाम के 7 बजे थे। इसलिए मिसेज मुदम्बो सभी को रात के खाने पर ले गईं। मुदम्बो, ठोस भोजन नहीं चबा सकता था। इसीलिए उसने गर्म नारियल के दूध के साथ एक विशाल एस्पिरिन की गोली खाई।

"मैं आज मिठाई नहीं खाऊँगी," श्रीमती मुदम्बो ने कहा। "क्योंकि मेरे पति के दांत दर्द में है।"
हर कोई बगीचे में खाने के लिए चला गया. उसके बाद डॉक्टर डी सोटो और उनकी पत्नी ने मुदम्बो के दांत का मुआयना किया, क्योंकि वही मकसद तो उन्हें अफ्रीका लाया था।

डॉक्टर डी सोटो ने इतनी सड़ी हुई दाढ़ पहले कभी नहीं देखी थी। उन्हें कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि कोई अन्य दंत चिकित्सक उसे ठीक नहीं कर पाया था! "मुझे विश्वास है कि मैं इस सड़ी हुई दाढ़ को फिर से ठीक कर सकता हूं," डॉक्टर डी सोटो ने घोषणा की। "इसके लिए मुझे उस हाथी दांत का एक छोटा टुकड़ा चाहिए जिसपर मेरी पत्नी अभी बैठीं हैं।"
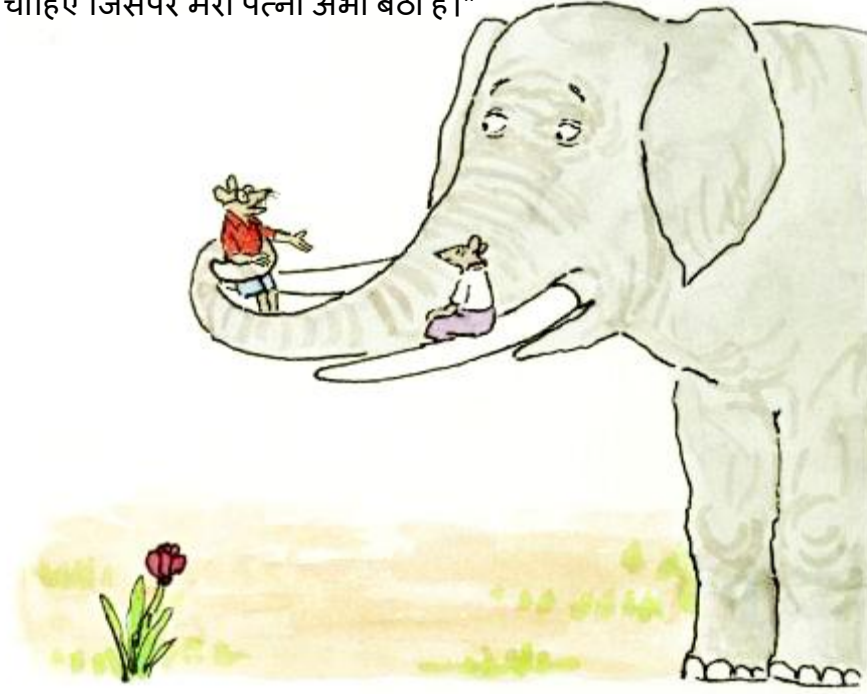
मुदम्बो को याद आया। उसके लम्बे हाथी दांत उसकी शान थे - उसकी सबसे प्रशंसित विशेषता थी। "मैं इसके बारे में सोचूंगा," उसने कहा।

श्रीमती मुदम्बो ने एक बड़ा समझदारी का सुझाव दिया। "प्राकृतिक इतिहास के संग्रहालय में तमाम वालरस के दांत हैं, क्या हम उन्हें नहीं इस्तेमाल कर सकते?" उन्होंने पूछा। "वहां पर भव्य दांत हैं। और उनका रंग बिल्कुल हाथी दांत जैसा ही है।"
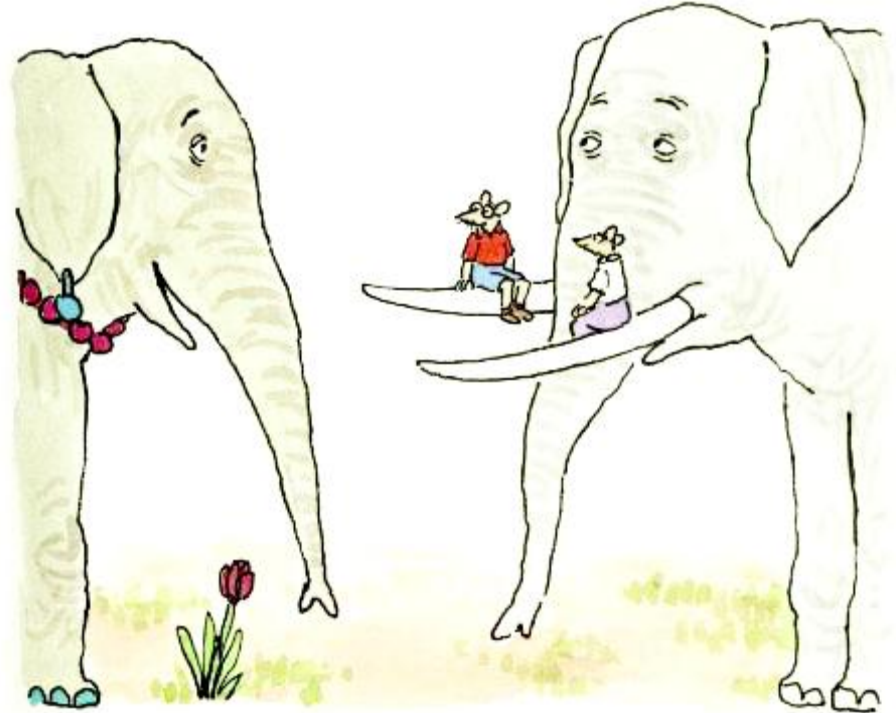
हर कोई इस बात से सहमत था कि संग्रहालय मुदम्बो के दांत के लिए एक छोटे टुकड़े को मना नहीं करेगा। वालरस भी मना नहीं करेगी।

एडिबा संग्रहालय के लिए रवाना हुआ, जो शुक्रवार को देर तक खुला रहता था। डॉक्टर डी सोटो अपने काम में लग गए। लेकिन डॉक्टर के सबसे नाजुक स्पर्श से भी मुदम्बो दर्द से कराहने लगा।

श्रीमती डी सोटो को अच्छी तरह पता था कि ऑपरेशन के दौरान उनके पति को किस औज़ार की कब आवश्यकता होगी।

अब सोने का समय भी बीत चुका था लेकिन डॉक्टर का अभी भी बहुत काम बाकी था। आधी रात के बाद कुशल दंत चिकित्सक, उनकी सक्षम सहायक, और दुखी रोगी ने कुछ नींद लेने का फैसला लिया और अगले दिन सुबह ऑपरेशन ज़ारी रखने की योजना बनाई.

डॉक्टर डी सोटो और उनकी पत्नी, मुदम्बो के पिनकुशन पर जाकर सो गए।

आधी रात के आसपास, जबकि उनकी पत्नी सोईं थीं, तब डॉक्टर बर्नार्ड डी सोटो का अपहरण कर लिया गया। एक हाथ ने उनके मुंह को ढँका, और फिर होनकिटकोंक नाम का रीसस बंदर उन्हें वहां से उठा कर ले गया।
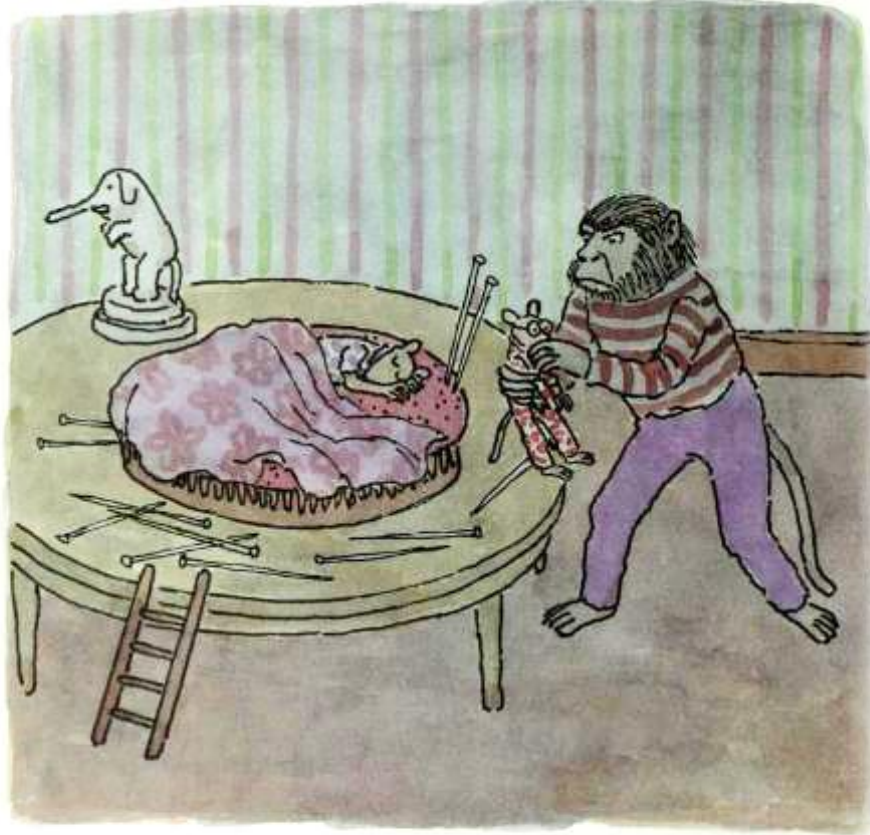
"सर! यह क्या है? डॉक्टर डी सोटो ने जैसे ही उनका मुंह खुला पूछा, "आप मुझे कहाँ ले जा रहे हैं? "

"बकवास बंद करो!," बन्दर ज़ोर से चिल्लाया.

(होनकिटकोंक और मुदम्बो के बीच पुरानी दुश्मनी थी. मुदम्बो के एक बार सार्वजनिक रूप में बन्दर को "मूर्ख" बुलाया था. वो बन्दर भारत छोड़कर इसलिए नहीं आया था कि कोई हाथी उसकी इस तरह बेइज़्ज़ती करे. वो मुदम्बो को खूब कष्ट पहुँचाना चाहता था.)

होनकटकोंक दंत चिकित्सक को जंगल में अपने गुप्त ठिकाने पर ले गया. वहां उसने डॉक्टर को पक्षी के एक पिंजरे में बंद कर दिया, और उन्हें पत्तियों से ढँक दिया। "आपको ऐसा करने का कोई कानूनी अधिकार नहीं है!" डॉक्टर डी सोटो रोए। होनकटकोंक ने उसका कोई जवाब नहीं दिया। वो वहां से दूर चला गया। पर वो खुद से बेहद खुश था।

"कैसा मूर्ख है!" दंत चिकित्सक खुद बड़बड़ाया। उन्होंने पिंजरे की सलाखों को दबाया, और उन्हें अलग करने की कोशिश की, लेकिन वो उसमें सफल नहीं हुए। रात भर, वो पिंजरे में गोल-गोल घूमते रहे और अपनी प्यारी पत्नी डेबोरा की चिंता करते रहे। अब उनकी पत्नी का बहुत ख़राब हाल होगा!

और वास्तव में उनका अनुमान बिल्कुल ठीक था। डेबोरा भी, गोल-गोल चक्कर काट रही थीं। क्या कोई जंगली जानवर उनके प्रिय बर्नार्ड को खा गया था? क्या वो भेड़िया था? या एक डरपोक बिल्ली? कहीं कपड़े समेत उन्हें कोई निष्ठुर अजगर तो नहीं निगल गया था?
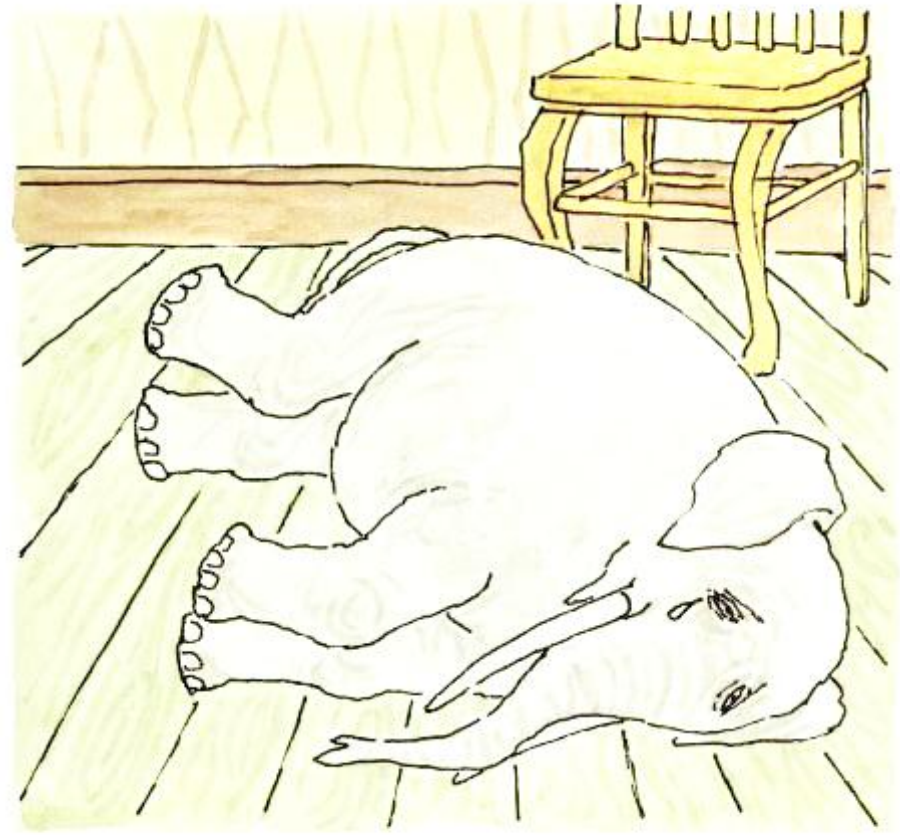
बेशक डॉक्टर डी सोटो अपने मरीज को लेकर भी चिंतित थे। उस बेचारे के दांत का दर्द कैसा था? गरीब मुदम्बो, गले की खराश से अधिक तकलीफ सहन नहीं कर सकता था। कभी-कभी, वो दर्द के मारे फर्श पर कूदता था और पूरे घर में तहलका मचा देता था।

"क्या कोई मुझे ढूंढ रहा होगा!" डॉक्टर डी सोटो ने अचरज किया। डबवान के सभी लोग डॉक्टर को ढूंढ रहे थे - यहाँ, वहाँ और हर जगह। दूसरे दिन डॉक्टर ने दो बार कुछ आवाजें सुनीं: "डॉक्टर डी सो-ओ-टो-डॉक्टर! डॉक्टर बर्नार्ड डी-सो-टो!"

वो वापस चिल्लाए। "मैं यहाँ हूँ! यहाँ पर! मैं यहाँ हूँ!" लेकिन उनकी आवाज बहुत धीमी थी। यह न भूलें, वो सिर्फ एक चूहा थे।

पांच दिनों तक जब उन्हें खाने-पीने को कुछ भी नहीं मिला तो डॉक्टर डी सोटो को अपनी आने वाली मौत का एहसास हुआ। अपनी प्रिय डेबोरा को कभी न देखने के विचार ने उन्हें गुस्से से पागल कर दिया। फिर उन्होंने जेल की दो सलाखों को कसकर पकड़कर दबाया और पिंजरे से बाहर निकले। वो एक चांदनी रात थी।

"मैं आ रहा हूँ, डेबोरा, मैं आ रहा हूँ!" उन्होंने कहा। कमजोर होने के कारण, वो अंधेरे में लड़खड़ा कर चल रहे थे. अंत में वो पस्त होकर एक चट्टान पर गिर गए और उनके टखने में फ्रैक्चर हो गया।
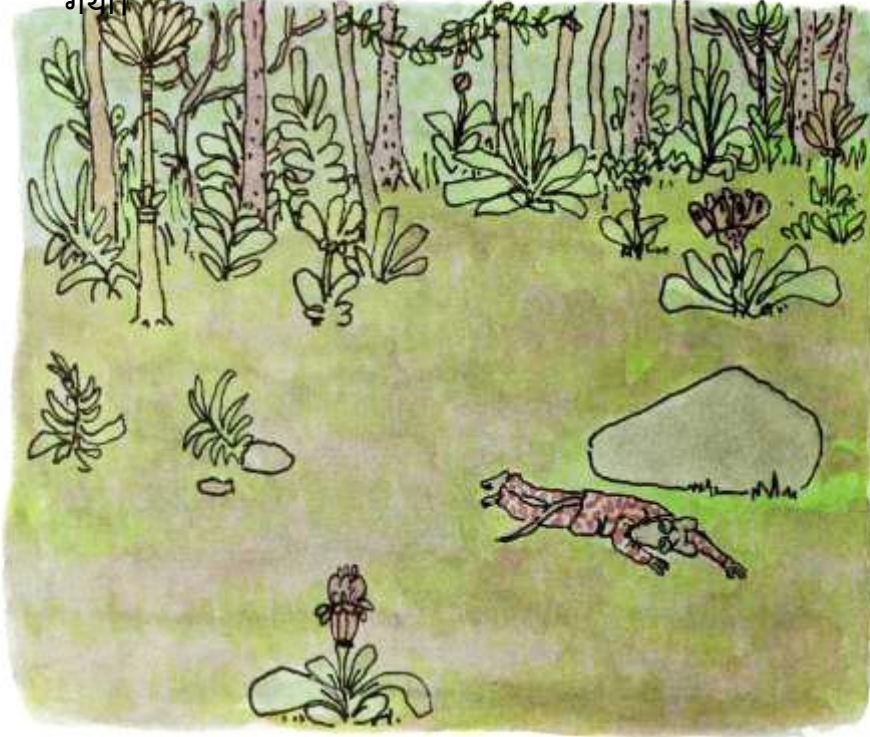
"आगे क्या होगा?" दंत चिकित्सक ने खुद से पूछा। अब वो खुद को एक इंच भी आगे नहीं खींच सकते थे। उनकी शक्ति अब ख़त्म हो गई थी।

डॉक्टर डी सोटो अपनी पीठ पर लेटे-लेटे बार-बार अपनी पत्नी का नाम जप रहे थे. काश वो अफ्रीका नहीं आए होते!
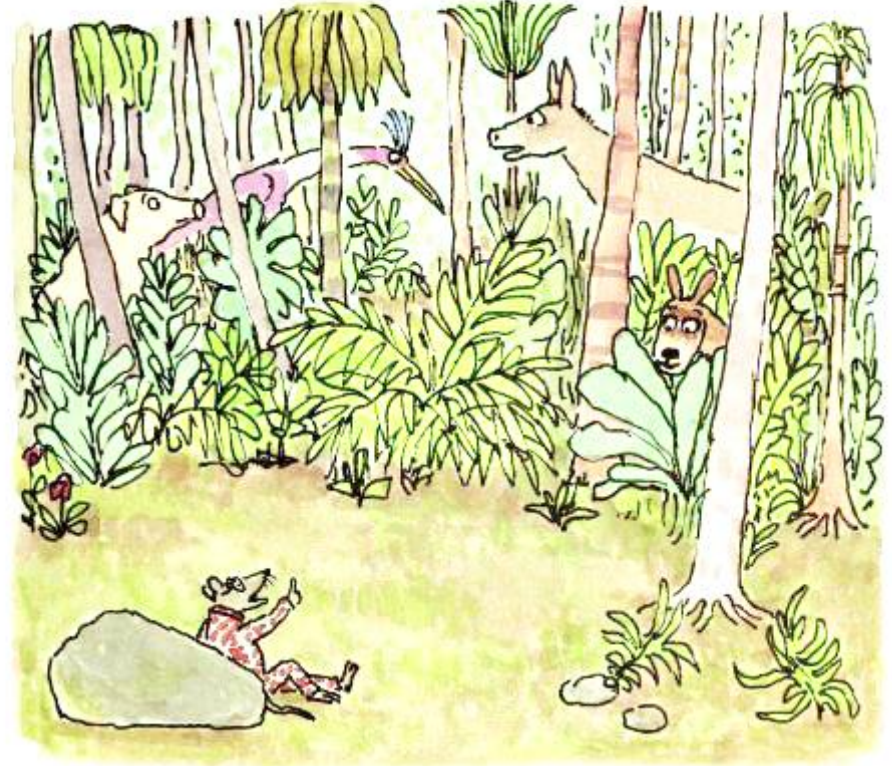
लेकिन सूर्योदय के तुरंत बाद खुशनसीबी से एक खोजी पार्टी ने डॉक्टर को ढूंढ निकाला। फिर सभी लोग वहां दौड़ते हुए आए।

डॉक्टर डी सोटो की हालत देखकर खोजकर्ता भयभीत हुए। उन्होंने डॉक्टर के टखने को देखा फिर वे डॉक्टर को स्ट्रेचर पर लिटाकर उन्हें वापस मुदम्बो के घर ले गए। वहाँ काफी देर तक पति-पत्नी एक-दूसरे से लिपटे रहे, चूमते और रोते रहे।
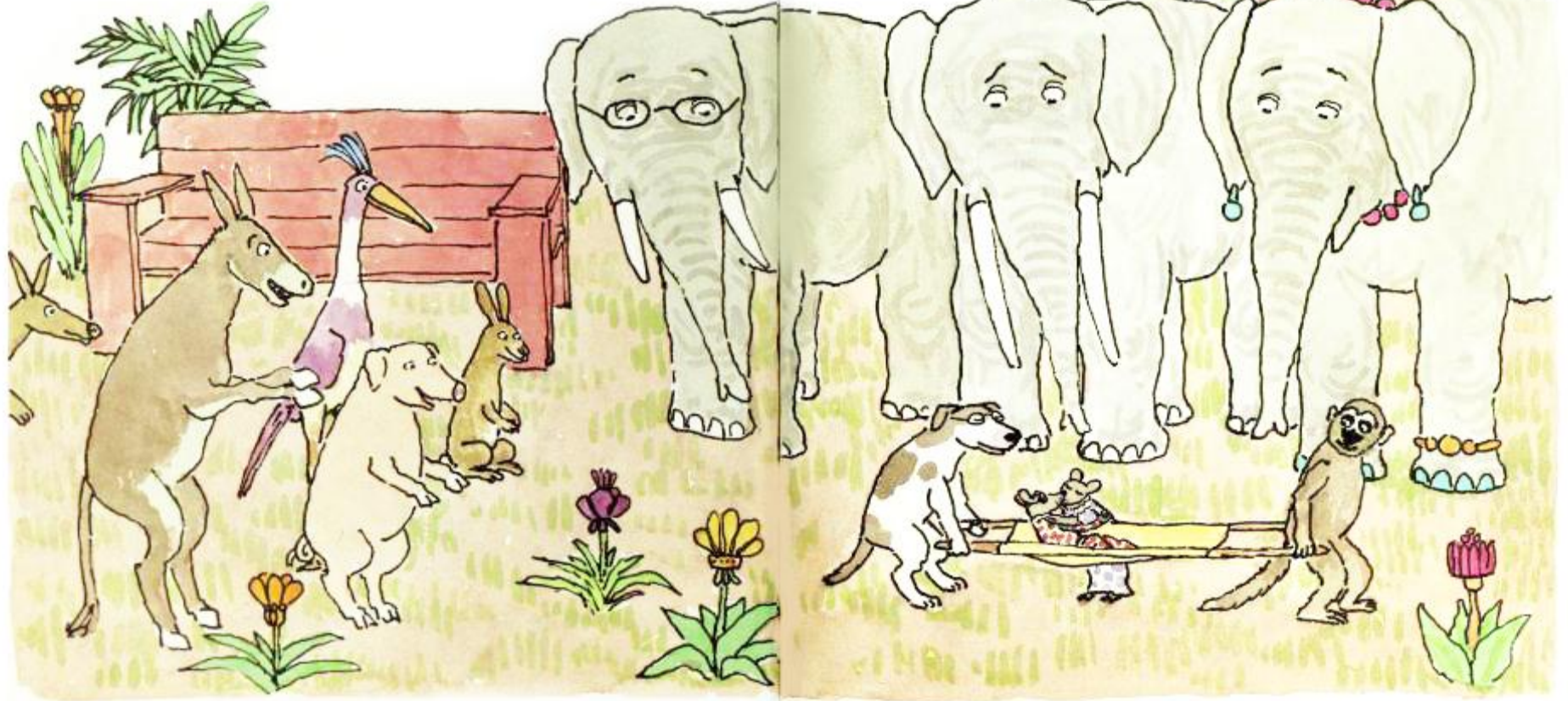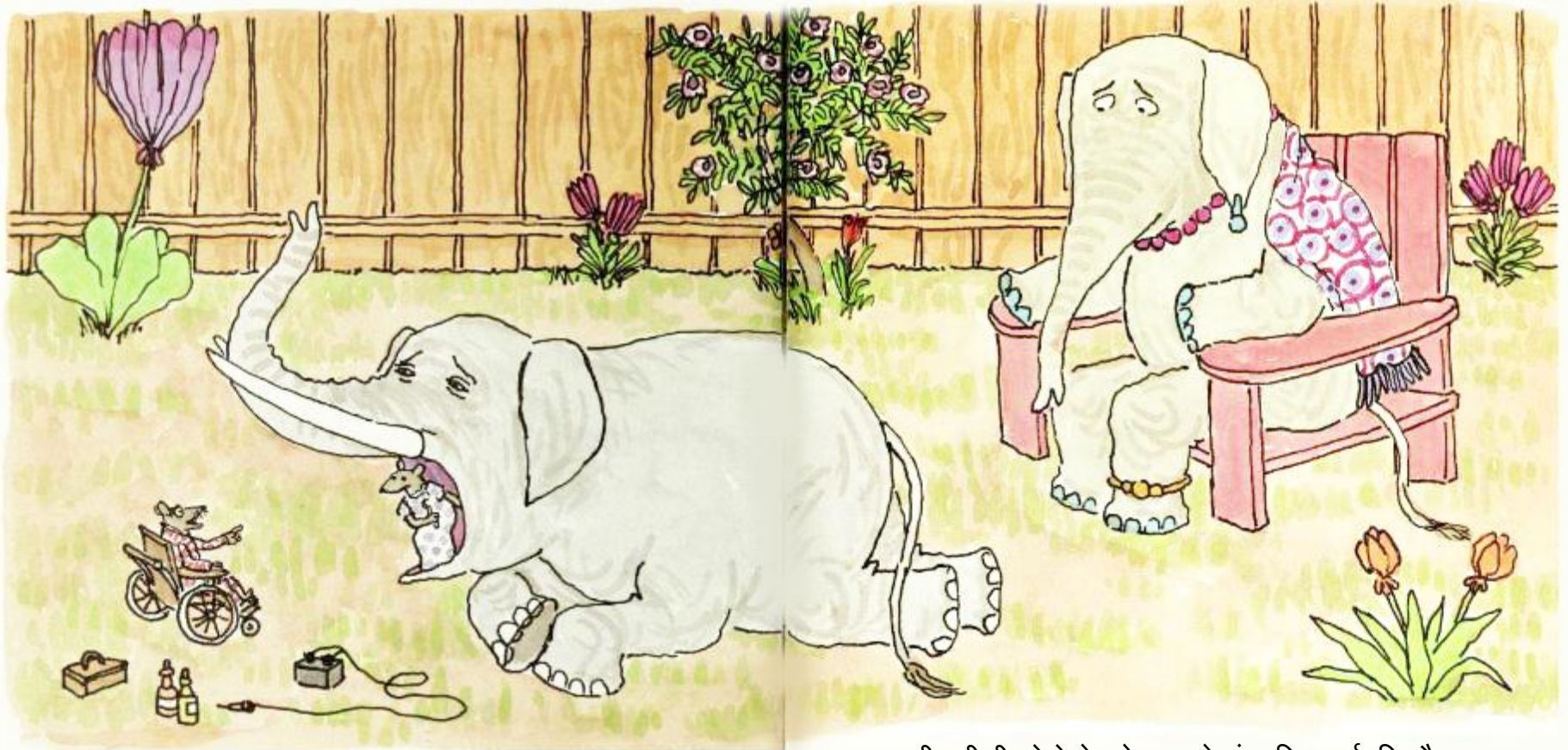
एक पनीर सैंडविच और दो कप कड़क चाय पीने के बाद, डॉक्टर डी सोटो ने मामले को अपने हाथ में लिया। एक खिलौना व्हील-चेयर में बैठकर उन्होंने अपनी पत्नी को आगे क्या करना है वो निर्देश दिए. पत्नी ने ऑपरेशन का काम ज़ारी रखा.

श्रीमती डी सोटो ने बचे हुए सड़े दांत की खुदाई की और कुशलता से संग्रहालय से लाये वालरस टस्क के टुकड़े को वहां फिट किया। दांत और टस्क आपस में एक-साथ जुड़ने के बाद मुदम्बो की दाढ़ एक तरह से बिल्कुल नई बन गई!
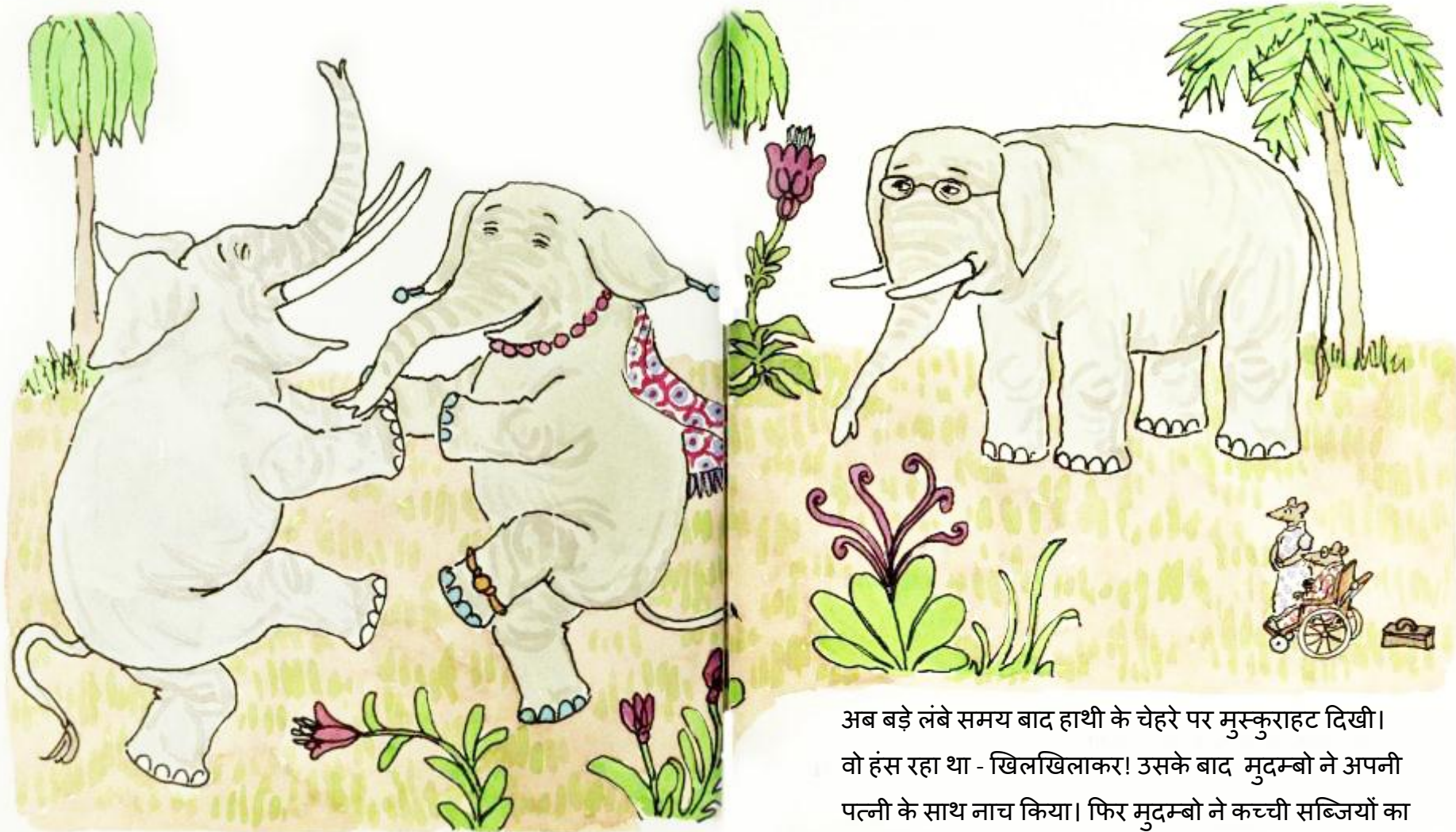
अब बड़े लंबे समय बाद हाथी के चेहरे पर मुस्कुराहट दिखी। वो हंस रहा था - खिलखिलाकर! उसके बाद मुदम्बो ने अपनी पत्नी के साथ नाच किया। फिर मुदम्बो ने कच्ची सब्जियों का एक बड़ा भोज किया, जिसके बाद उसने मूंगफली के दाने खाए।

बाद में डी सोटो दंपत्ति का क्या हुआ? मुदम्बो ने अपने वादे अनुसार डी सोटो को एक बहुत बड़ा पुरूस्कार दिया।

"बर्नार्ड," श्रीमती डी सोटो ने कहा, "मुझे लगता है कि हम यहाँ तब तक आराम करेंगे जब तक आप पूरी तरह से ठीक नहीं हो जाते। फिर हम इस महंगे पुरूस्कार का उपयोग अपने सुंदर ग्रह के कुछ अन्य हिस्सों को देखने के लिए करेंगे!"

"मेरी प्यारी डेबोरा," डॉक्टर डी सोटो ने कहा, "तुमने मेरे दिल की बात कह दी।"

समाप्त